eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

उत्तरांचल की क्षेत्रीय संस्कृति का महत्व

[1]डॉ0 शालिनी त्रिपाठी
[1]एसोसिएट प्रोफेसर संगीत, डी0जी0पी0जी0 कालेज, कानपुर उ0प्र0।

Received: 12 Jan 2020, Accepted: 19 Jan 2020, Published on line: 30 Jan 2020

Abstract

हमारे संस्कृति की विराट्ता को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि संस्कृति का स्वरूप अत्यन्त विराट होता है। संस्कृति किसी जाति विशेष (जैसे आर्य, अनार्य, बौद्ध, मुसलमान आदि) की होती है तथापि वर्तमान में संस्कृति शब्द के अर्थ में भी परिवर्तन हुआ है और उत्तरांचल की संस्कृति पूर्वांचल की संस्कृति पंजाब की संस्कृति आदि जैसे शब्द प्रचलन में आये हैं, विराट हिन्दू संस्कृति ने विशाल भारत भूमि में अलग–अलग क्षेत्रों में अपने स्वरूप में कुछ परिवर्तन किया है तथापित इसकी आत्मा भारतीय है।

Key words :- उत्तरांचल, संस्कृति का स्वरूप, क्षेत्रीय संस्कृति, महत्व।

Introduction

अखिल भारतीय वैदिक संस्कृति की परम्पराएँ यहां अपनी सम्पूर्णता में जीवित हैं। संस्कृत और ज्योतिष का ज्ञान ब्राह्मण और क्षेत्रीयों को ही नहीं शिल्पकारों को भी है।'' इतिहासकार मानते है कि भारतीय संस्कृति को पुरूधा वैदिक ऋषियों ने हिमालय की कन्दराओं में तपस्या की थी और सत्य के दर्शन किये, यह भी माना जात है कि किरात् किन्नर, नाग, गन्धर्व, आदि जातियों का मूल हिमालय क्षेत्र ही रहा है। यदि कुछ परम्पराओं को छोड़ दें तो उत्तरांचल की संस्कृति प्राचीन आर्य संस्कृति का ही वर्तमान स्वरूप है।

किसी क्षेत्र विशेष संस्कृति का अर्थ है, उस समाज के रहन–सहन, खान–पान आदि में वहाँ के भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार आये हुए परिवर्तन धर्म, जाति, समाज, संस्कार आदि में उत्तरांचल के समाज में जो परिवर्तन आये हैं उनका समुचित विवेचन हम आगे आने वाले अध्यायों में यथास्थान करेंगे तथापि उत्तराँचल की संस्कृति कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर हम यहाँ विचार कर रहे हैं –

जागर

जागर शब्द का सामान्य अर्थ 'जागरन' है। जाग में लोग गायक (जागरिया) अपने वीर रस पूर्ण गायन से आत्मा का आवाह्न करता है। इस प्रक्रिया में हुड़का और थाली साथ–साथ बजते रहते हैं। इसके प्रभाव से विशेष व्यक्ति के शरीर में प्रकम्पन होने लगता है। उसे 'डागरिया' कहा जाता है। डागरिया जगरिये के गायन और हुड़का थाली के बजने पर नाचने लगता है। विश्वास किया जाता है कि उस समय उस पर किसी देवता का अ7वतरण है और माना जाता है कि देवता के अवतरण की अवस्था में डगरिया जो कुछ कहता है वह सत्य होता है किसी के बीमार होने पर अिवा किसी विशेष

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

प्रसन्नता के अवसर पर जागरण का आयोजन किया जाता है। भूत–प्रेत बाधा के कारण भी जागरका आयोजन किया जाता है।

''विश्वास किया जाता है कि ग्राम देवताओं की आत्मायें जगरियों द्वारा आवाह्न किये जाने पर किसी स्त्री या पुरूष के रूप में प्रवेश कर जाती है और वे हमें कष्टों से छुटकारा दिलाती है। डगरिया आवतरण की अवस्था में पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देता है और उसे कभी–कभी बुलाने का कारण भी पूंछता है''

अवतरित होने वाले देवता प्रायः उत्तरांचल के लोक देवता होते हैं पर यदा–कदा हनुमान भगवती आदि का अवतरण भी होता है।

उत्तरांचल का समाज धार्मिक और सामाजिक विषयों में अत्यनत उदार है। प्राचीन काल में मारे गये ऐतिहासिक पुरूषों को सम्मान दिया जाना उत्तरांचल की परम्परा है। उदाहरण स्वरूप –

''दाराशिकोह के पुत्र सुलेमान शिकोह ने गढ़वाल के राजा के यहाँ शरण ली थी, औरंगजेब के दबाव में आकर सुलेमान को उसे सौंपना पड़ा, औरंगजेब ने उसकी हत्या कर दी । सुलेमान शिकोह की याद में आज भी टिहरी के पास बादशाही थॉल (बादशाह की याद में मेला) होता है। पाण्डवों ने उत्तरांचल में शरीर को त्यागा था। इसलिए आज भीउनकी पूजा–अर्चना है। यही नहीं क्रूर और हिंसक शेद (मरे हुए इंसान की आत्मा) को यहाँ शेद देवता मानकर प्रतिष्ठित किया जाता है।

स्त्रियों के प्रति सम्मान का भाव

उत्तरांचल के समाज में स्त्री के प्रति प्राचीनकाल से ही एक सम्मान का भाव रहा है। इसमें सन्देह नहीं कि उत्तरांचल के समाज में नारी के श्रम का एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। फिर भी दहेज जैसी कुप्रथा और इसके लिए स्त्री जाति को प्रताड़ित करने की परम्परा यहाँ के समाज में प्राचीन काल से ही नहीं थी। प्रायः लडके वाले ही वधु के घर रिश्ता मांगने जाते थे और आज भी यह परम्परा जीवित है। आज के भौतिक–वादिक समाज का प्रभाव उत्तरांचल पर अधिक नहीं पड़ा है।

''कुछ समय पूर्व तक लडके के घरवाले लड़की के घरवालों के गरीब होने पर उन्हें विवाह का खर्च देते थे''

परम्पराओं का ह्रास

वैश्वीकरण और भौतिकवाद की अति ने अन्य भारतीयों के समाजों की तरह उत्तरांचल के समाज को भी प्रभावित किया है। जहां पहले सामुदायिक भावना अपनी चरम सीमा पर दिखाई देती थी अब धीरे–धीरे ह्रास की ओर उन्मुख होती जा रही है। सामाजिक कार्य हो या कृषि आदि व्यक्तिगत कार्य मेले हो या विवाह आदि शुभ कार्य पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव ने इस सभी पर अपना असर डाला है। झोडा हो या चाचरी या जागर आदि अनुष्ठान क्यों न हो सभी का रंग फीका पड़ता जा रहा है। प्राचीन गीत, गाथायें, नृत्य, कलायें धीरे–धीरे लुप्त होती जा रही है। इसके साथ ही शराब ने

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

उत्तरांचल के समाज को बुरी तरह प्रभावित किया है। इसमें आम उत्तरांचलवासी निराश और हताश दिखायी देता है।

यातायात के साधनों की कमी, रोजगार का अभाव तथा असन्तुलित विकास ने पलायन की समस्या को जन्म दिया है। उत्तरांचल की युवा पीढ़ी मैदानों और नगरों की ओर पलायन करने के लिए बाध्य हुई है। इसी के चलते विधानसभा क्षेत्रों के परिसीमन का मुद्दा उठ खड़ा हुआ है। जिसमें मैदानी और पर्वतीय क्षेत्रों के बीज एक वैमनस्य को जन्म दिया है। यह उत्तरांचल की एवं उज्जवलता समस्या है। स्वाभाविक रूप में प्रत्येक उत्तरांचलवासी इस समस्या के समाधान की अपेक्षा रखता है। यदि ऐसा न हुआ तो अन्य पर्वतीय राज्यों के समान यहाँ भी समस्यायें उठ खड़ी हो सकती है।

संदर्भ सूची

1. पद्मेश बुडाकोटी– उत्तराखण्ड आन्दोलन का दस्तावेज, पृ0सं0 253
2. जमनादत्त वैष्णव–संस्कृति संगम उत्तरंचल–पृ0 20
3. पद्मेश बुडकोटी–उत्तराखण्ड आन्दोलन का दस्तावेज, पृ0सं0 255
1. पद्मेश बुडकोटी–उत्तराखण्ड आन्दोलन का दस्तावेज, पृ0सं0 256